भाषा का वर्चस्व और राष्ट्रीय संस्कृति : भारतीय संदर्भ में

DR.SINA.A.R
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF HINDI
M.E.S.PONNANI COLLEGE, PONNANI SOUTH PO
MALAPPURAM.

भाषा हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमारे विचार विनिमय का साधन है। जो मनुष्य को जानवरों से अलग करता है, भाषा मनुष्य का एक विशिष्ट उपहार है। भाषा केवल विचार विनिमय का साधन ही नहीं हमारी संस्कृति का अविभाज्य अंग भी है।

भाषा विशेष लोगों की विचार प्रक्रिया को प्रभावित करती है या लोगें की संस्कृति भाषा को प्रभावित करती है। संस्कृति भाषा को जन्म दिया है या भाषा संस्कृति को जन्म दिया है। लेकिन इस में कोई शंका नहीं है कि दोनों आपस में जुडी हुई है।

विश्वविख्याद भाषा वैज्ञानिक नोमचोस्की का कथन है कि सभी भाषायें एक ही भाषा की बोली है-वही मनुष्य की भाषा है- लेकिन सब अपनी संस्कृति के प्रभाव के कारण सब अलग दिखाई पडती है। हमारे महान उपलब्धियों की परंपरा के संरक्षण केलिए भाषा आवश्यक है। एक प्रांत की भाषा दूसरी भाषा के संपर्क होने के कारण इस के शब्द भण्डार के निरमाण में, स्वरूप के विकास में और सांस्कृतिक आदान प्रदान का भी होजाता है। इसी प्रकार के सान्सकृतिक आदान प्रदान में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है।

भारतीय संस्कृति की सबसे बडी विशेषता उसकी मानवता है भारतीय अपने आदरशों से ज्यादा मानवीयता और शांति पर विश्वास रखते है। इसीलिए भारतीय संस्कृति अभी जीवित है। सहिष्णुता भारतीय संस्कृति का दूसरा गुण मानाजाता है। इसी के कारण गाँधीजी को सत्याग्रह और अहिंसा पर अधिष्ठित स्वतंत्रता संग्राम चला सका। विविधता में एकता भारतीय संस्कृति का एक विशेषगुण मानाजाता है जो पौराणक युग से लेकर आज तक भातीय समाज समाज में देखने को मिलता है। हमारे संविधान में जो धर्म निरपेक्षता की जो बात कह गयी है वह भारत में पौराणिक युग से ही चली आरही है। सभी को अपने धर्म पर विश्वास करने की स्वतंत्रता है। एसा भी होता है एक

धर्मवाले किसी दूसरे लोगों के विशिष्ठ स्थानों का दर्शन भी करते है। बारी के सामाजिक व्यवस्था बुनना भारतीय संस्कृती की एक प्रमुख विशेषता है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था संयुक्त परिवार प्रणाली पर आधारित है। दादा-दादी और नाना-नानी घर में प्रमुख स्थान है। हम देख सकते है भाषा और साहित्य भारतीय सामाजिक संस्कृति पर कितना प्रभाव डाला है। संस्कृत भाषा ने वेदों, उपनिषदों, रामाण, महाभारत आदि रचनाओं के माध्यम से जो आदर्श भारतीय समाज के सामने रखा वह बाद में आने वाली भाषायें अपनी साहित्यिक संपदा के सहारे बखूबी निभाता आरहा है।

जब से मनुष्य लिपियों का आविष्कार किया है तब से लेखन संस्कृति और जीवन शैली को प्रतिबिंबित किया है। इस प्रक्रिया में प्रत्येक संस्कृति द्वारा विकसित अपनी भाषा और एक विशालसाहित्यिक आधार बनाया। सभ्यता का यह साहित्यिक आधार सदियों से अपने भाषा और संस्कृति में हुए विकास के बारे में वताता है। हमारे अतीत में बनाया भाषा और साहित्य के बारे में बताता है हमारे अतीत में बनाया भाषा और साहित्य के बारे में पढने के द्वारा हम हमारी सभ्यता को समझने में सक्षम हो जायेंगे ।

संस्कृत हमारे भारत की सब्से प्राचीन भाषा है। संस्कृत सारे भारतीयभाषाओं की माता मानीजाती है। भारत में ऐसी कोई भाषा नही है जिस पर संस्कृत की छाया न पडी है। संस्कृत इस देश के धर्म, संस्कृति एवं चिंतन की परंपराओं की प्रतीक है। देश की सांस्कृतिक एकता एवं स्थिरता में संस्कृत का महत्वपूर्ण योगदान है। विभिन्न विषयों के अभिव्यंजना की इसमें शक्ति है।

संस्कृत क्षेत्रों और सीमाओं की बाधाओं को पार करने वाली भाषा है। उत्तर से दक्षिण तक या पश्चिम से पूर्व तक भारत में ऐसा कोई जगह नहीं है जहाँ संस्कृत का प्रभाव नहीं है। भारत के बहुत सी भाषायें संस्कृत से जन्मलिया है। संस्कृत में वेद,उपनिषद,पनराण आदि की रचना हुई है। अतीत के भाषा एवं साहित्य साहित्य को पढने पर हम हमारे संस्कृति के महत्व को पहचान सकते है। वह पहचान उसी समय में विकसित भाषा के माध्यम से ही हो सकता है।

भीरतीय साहित्य भारोपीय भाषा परिवार का सबसे प्राचीन साहित्य माना जाता है। भारतीय साहित्य की शुरूआत पहले संस्कृत में हुई थी। पहले वेदों की रचना हुई थी। भारतीय साहित्य का

सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद माना जाता है। सामवेद, अधर्ववेद,ब्राह्मण, आरणयक और उपनिषदों की रचना बाद में हुई है। संस्कृत हमारे सबसे प्राचीन भाषा है। वह भारतीय संविधान की मान्यता प्राप्त भाषाओं में एक है। संस्कृत का साहित्यभण्डार विश्वव्यापी है। पाणिनी महर्षी ने सबसे पहले संस्कृत केलिए व्याकरण ग्रंध लिखा, नाम है 'अष्ठाध्यायी' । बौधों ने अपनी धर्म के अंतरगत संस्कृत सीहित्य को प्रमुख स्थान दिया था। संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसे धर्म या अन्य बाधाओं से रोका नही जा सकता है। उत्तर से दक्षिण तक या पूरब से पश्चिम तक ऐसी कोई जगह नहीं जिसका संबन्ध संस्कृत से नहीं है। कालिदास की रचनायें संस्कृत साहित्य को ऊँचाई से और ऊँचाई तक लेगया।

भारत का प्राप्त सबसे प्राचीन साहित्य वेद ही है। वेदों की रचना संस्कृत भाषा में हुई है और मौखिक रूप से नयी पीठियों को पहुँची दोती थी। वेदों को आज भी संरक्षित रखना हमारा श्रेष्ट प्रवृत्ती माना जा सकता है। वेदा शव्द का अर्थ विज्ञान है। वेदों में दुनिया को एक ही परिवार माना है 'वसुधैवकुटुमबकम्' वेद चार है - ऋगवेद,सामवेद, यजुरवेद अघर्ववेद आदि कवि वात्मीकी द्वारा रचित रामायण महाकाव्य संस्कृत का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ माना जाता है। रामायण को आदिकाव्य कहा जाता है। भारतीय संस्कृति का आधारभूत ग्रंध है रामायण और महाभारत। भारत के सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्यों का निर्धारण रामायण के आधार पर हुई है। रामायण की रचनाकाल हिंदु कालगणना के आनुसार त्रेता युग में मानाजाता है। रामायण लोगों के सामने जो आदर्श समाज के सामने रखता है वह अब भी भारत वासियों का मार्ग दर्शन करता है। महाभारत भी भारत के हिंदुओं का प्रमुख काव्यग्रंथ है। व्यास ने इसकी रचना की है ये द्वापर युग के अंत रची हुई मानीजाती है। इसके संदर्भ में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को उपदेश देने के रूप में लिखा है जो मानव को अपनी सभी समस्यओं का हल प्रदान करता है। इसी प्रकर बहुत सारे पौराणिक रचनायें है जो भारतीय संस्कृति की आधार शिलायें मानी जा सकती है। भारतीय संस्कृति की आधारभूत रचनायें संस्कृत भाषा में हुई है,बाद में आनेवाली भाषायें या तो संस्कृत की उत्तरदायी भाषा है या संस्कृत के प्रभाव से संपन्न भाषा है। अब हिंदी यह उत्तरदायित्व बखूबी निभाती आ रही है।

भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता,मानवकल्याण,मिलनसार, सहिष्णुता एवं खुले दिमाग की प्रवृत्ति गहराई से देखने को मिलता है । यह हमारे महान पूर्वजों और महात्माओं के अथक प्रयासों के

कारण है। हमारे महान संस्कृति हमारे श्रेष्ठ भाषा और साहित्यों के माध्यम से आनेवाले पीढियों के प्रदान करेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. हिंदी भाषा साहित्य एवं संस्कृति -डा. सी.एल.प्रभात,डा.दैवेश श
2.हिंदी का प्रचार और प्रसार-प्रो.राम लाल परीख।
3.सहित्य में संप्रेक्षण की समस्या-डा. कृष्णालाल शर्मा।
4. The Cultural Heritage of India –Suniti Kumar Chatterji